Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सिंह बंधु तेजपाल सिंह और सुरिन्दर सिंह का हिंदुस्तानी संगीत के विकास में योगदान

BALWINDER SINGH

Ph.D. Research Scholar,Punjabi University, Patiala

सारांश

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत मैलोडी प्रधान और रचनात्मकता से भरपूर है, यही कारण है कि यह एकल प्रस्तुति का धारणी है। रचनात्मकता की यह प्रक्रिया हर समय चलती रहती है। दो कलाकारों की निर्माण प्रक्रिया का समन्वय और संयोजन इस परंपरा में एक कठिन कार्य है। दो कलाकारों द्वारा एक साथ मिल कर दी गई कलात्मक प्रस्तुति को जुगलबंदी कहा जाता है। घरानों के आगमन से इस की नींव ओर भी मज़बूत हुई क्योंकि घरानों के प्रचलन के बाद कई जुगल गायक उभर कर सामने आए जिसके कारण वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में जुगलबंदी की परम्परा विशाल रूप धारण कर चुकी है। प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक सिंह बंधु स. तेजपाल सिंह और सुरिंदर सिंह ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में जुगल गायक के रूप में विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने अपने गुरुओं से विरासत में मिली गायन शैली की परम्परा को न केवल बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ ग्रहण किया, बल्कि अपनी योग्यता से इस में बहुत कुछ नया भी शामिल किया। उन्होंने शास्त्रीय संगीत में जुगलबंदी की प्रक्रिया को नया आयाम दिया। इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने सिंह बंधु के योगदान को उभारने की कोशिश की है। ऐसे कला साधकों के जीवन और योगदान का दस्तावेज़ीकरण करना बहुत आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ संगीत की अमीर विरासत और इन संगीतकारों से अवगत हो सके।

मुख्य शब्द: जुगलबंदी, सिंह बंधु, योगदान

भूमिका

पंजाबी संगीतकारों ने हिंदुस्तानी संगीत की विभिन्न धाराओं में अपनी अलग पहचान बनाई है। इस पहचान को ओर गहरा करने में सिंह बंधु स. तेजपाल सिंह और स. सुरिंदर सिंह का नाम उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अपना रास्ता खुद तय किया। उजड़ने और बसने का दौर उन्होंने अपनी आँखों से खुद देखा लेकिन संगीत साधना ने उनको बिखरने नहीं दिया। गुरुवाणी के शबदों ने उनके साहस को ओर मज़बूत किया और कुछ कर गुज़रने की चाहत उन्हें दूसरे फ़नकारों से अलग कर गई। पंजाबी रंग में रंगी शख़्सियत सिंह बंधु का नाता लाहौर की सर ज़मीन से रहा जहाँ कला और संस्कृति की चाशनी हमेशा से घुली रही है।

11 अगस्त, 1947 को जब सिंह बंधु ने अपना घर (लाहौर) छोड़ा तो पूरे परिवार को सैकड़ों मील का सफ़र तय कर दूसरी जगह जाना पड़ा, जिस से परिवार बेहद दुखी था। लाहौर से दिल्ली पहुंच कर लोधी रोड पर स्थित भाई राम किशन के घर रुके। इस के बाद दिल्ली में अपनी मौसी के घर रहे और कुछ समय बाद दिल्ली में बस गए।[1]

जीवन और संगीत शिक्षा

सिंह बंधु में बड़े भाई स. तेजपाल सिंह का जन्म 24 जुलाई, 1937 को और छोटे भाई स. सुरिन्दर सिंह का जन्म 16 अगस्त, 1940 को लाहौर में पिता स. गोबिन्द सिंह और माता सुशील कौर के घर हुआ। इनके माता-पिता की इच्छा थी कि उनके बेटे अच्छी शिक्षा ग्रहण कर उच्च पदों पर नौकरी करें। सिंह बंधु बचपन से ही अच्छा गा लेते थे।दिल्ली के ख़ालसा स्कूल में पढ़ते हुए उनकी कीर्तन गायन की तरफ रुचि हो गई। स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक के सफ़र में मिली प्रशंसा ने इन की गायक बनने की इच्छा शक्ति को बहुत उत्साहित और मज़बूत किया। यहाँ बताना योग्य होगा कि आप को सिंह बंधु का ख़िताब सन् 1968 में

1 https://youtu.be/xT6DFnhtl1c Conversation with Singh Bandhu.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सवाई गंधर्व संगीत सम्मेलन, पुणे (महाराष्ट्र) में कार्यक्रम के अगले दिन अख़बार के मुख्य पन्ने पर आप के व्यक्तित्व के बारे में लिखी जानकारी से प्राप्त हुआ। इस से पहले उन्हें तेजपाल सिंह और सुरिंदर सिंह के स्वतंत्र नामों से जाना जाता था। सिंह बंधु को अपनी तीन बहनों और चार भाइयों का हमेशा भरपूर सहयोग मिला। बड़ी बहन रूप कौर, सतवंत कौर और छोटी बहन सतिंदर कौर हैं। स. सुरिन्दर सिंह से बड़े भाई रजिन्दर सिंह, परदुमन सिंह, गुरशरन सिंह, तेजपाल सिंह और छोटे भाई सुरजीत सिंह हैं। वर्तमान में सिंह बंधु तेजपाल सिंह गुड़गाँव में और सुरिंदर सिंह मुंबई में रह रहे हैं।

सिंह बंधु को संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने बड़े भाई जी. एस्स. सरदार (गुरशरन सिंह) से प्राप्त हुई। जी. एस्स. सरदार ने गायन की शिक्षा घरानेदार उस्तादों से प्राप्त की, जिन में बी. एन्न. दत्ता का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस के बाद सिंह बंधु ने इन्दौर घराने के विख्यात संगीत गुरु, उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब से संगीत की शिक्षा प्राप्त करनी शुरू की और ख़ाँ साहब के गंडा बंद शागिर्द बने। संगीत शिक्षा का यह सिलसिला लगातार 11 वर्ष तक चलता रहा।

सिंह बंधु ने संगीत की शिक्षा के साथ-साथ दसवीं और बारहवीं कक्षा की शिक्षा ख़ालसा स्कूल, दिल्ली और स्नातक की डिग्री हिंदू महाविद्यालय, दिल्ली से प्राप्त की। स. तेजपाल सिंह ने गणित विषय में एम.ए. दिल्ली विशवविद्याय से और 'संगीत प्रवीण' की डिग्री प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में पास की और स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। 1962 से लेकर 1982 तक गवर्नमेंट कॉलज, गुड़गाँव में संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे। इस रास्ते पर चलते हुए स. सुरिंदर सिंह ने बी. ए. (ऑनर्स) अंग्रेज़ी विषय में विश्वविद्यालय दिल्ली से और 'संगीत प्रवीण' की डिग्री प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से पास की। इस के बाद 1969 से 1981 तक मुंबई के आयकर विभाग में नौकरी की।

गायन शैली

सिंह बंधु को 17 जुलाई, 1982 में रेडियो से 'टॉप ग्रेड' मिला तो दोनों भाइयों ने ही अपनी-अपनी नौकरी छोड़ कर परिवार की इच्छा के विपरीत गायक बनने का दृढ़ संकल्प कर लिया। उन्होंने ने जुगलबंदी में कई सफल प्रस्तुतियाँ दी और दर्शकों की पहली पसंद बने।[1] सुरिंदर सिंह के अनुसार, "जब मैंने गायक बनने का संकल्प कर लिया तब मेरे परिवार ने मेरे साथ बहुत ज़्यादा बहस की और मुझे धमकी दी के उनका बेटा छोटी जाति का मिरासी बनेगा, जिसके पास न तो सरकारी गाड़ी होगी और न ही बंगला। बस वह तो परिवार का नाम डुबो देगा"।[2] आम प्रचलित धारणा है कि पंजाबियों और विशेष रूप से सिक्खों में शास्त्रीय संगीत प्रति झुकाव कम है लेकिन सिंह बंधु ने इस भ्रम को सफलतापूर्वक दूर किया। जुगलबंदी में उन्होंने कई दशकों तक नए कीर्तिमान स्थापित किए और पूरी दुनिया में सिक्ख भाई चारे का गौरव बढ़ाया। दोनों भाई संगीत साधना, कल्पना और आपसी संगीतक तालमेल के कारण जुगलबंदी में विशेष स्थान रखते हैं। स. सुरिंदर सिंह के मुताबिक, "हम जुगलबंदी में एक-दूसरे के पूरक और प्रेरक भी थे, इस लिए हमने कभी भी जुगलबंदी को झगड़बन्दी नहीं बनने दिया।"[3] सिंह बंधु ने उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब से सीखी हुई गायन शैली को जुगलबंदी के रूप में इस प्रकार ढाला के जिस में आपसी तालमेल के साथ-साथ विधिपूर्वक संयोजन भी दिखाई देता है। डॉ. निवेदिता सिंह के अनुसार, "सिंह बंधु न केवल शास्त्रीय गायक के रूप में स्थापित हैं, बल्कि उन के विचारशील और बुद्धिमान व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी गायकी में भी देखने को मिलता है। गायन में वैराग, मिठास, मधुरता और सादगी है।

1 तेजपाल सिंह (सिंह बंधु) प्रेरणा अरोड़ा, संगीत के देदीप्यमान सूर्या उस्ताद अमीर ख़ाँ जीवन एवं रचनाएं, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 73.

2 डॉ. गुरनाम सिंह, पंजाबी संगीतकार, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2005, पृष्ठ 122.

3 सुरिंदर सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मुंबई, 19 मई, 2022.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

शबद कीर्तन करते हुए राग को साक्षात करना और शबद में लीन हो जाना उनके गायन के मुख्य गुण है। उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में केवल जुगलबंदी के नए आयाम ही स्थापित नहीं किये बल्कि अन्य कलाकारों के प्रेरणा स्रोत भी बने।"[1]

उस्ताद अमीर ख़ाँ साहब का ख़्याल गायन में एक अलग स्थान है और वह इन्दौर घराने के संस्थापक भी हैं। ख़्याल की संपूर्ण विधिवत् बढ़त, सच्चा सुर लगाव, बंदिशों की ख़ूबसूरत पेशकारी, भावसंचार जैसे अनेक पहलुओं को सिंह बंधु ने पूरी लगन और श्रद्धा के साथ अपने गुरू से ग्रहण किया। ख़ाँ साहब के गायन ने केवल सिंह बंधु को प्रभावित ही नहीं किया बल्कि उनके पूरे व्यक्तित्व की अमिट छाप भी उनके गायन से अनुभव की जा सकती है। गुरु के प्रति भक्ति भाव और दृढ़ विश्वास के कारण ही सिंह बंधु ने शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में लाखों श्रोताओं का दिल जीता। मंच प्रदर्शन के लिए ये दर्शकों की पसंद को ध्यान में रखते हुए अधिकांश प्रचलित रागों और बंदिशों का गायन करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन

कला के क्षेत्र में पुस्तकों की रचना किसी भी कलाकार की विशेष उपलब्धि होती है क्योंकि यह प्रकाशित कार्य उस की कला साधना से उपजता है। सिंह बंधु ने अपने कलात्मक ज्ञान और अकादमिक योग्यता का प्रयोग करते हुए गायन के साथ-साथ संगीत पर कई पुस्तकें भी लिखी। तेजपाल सिंह द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विधिवत् संगीत शिक्षण (दो भाग, 2001), 'संगीत के देदीप्यमान सूर्या उस्ताद अमीर ख़ाँ जीवन एवं रचनाएं' (2005) मूल रूप में हिंदी भाषा में थी जिस का बंगाली और अंग्रेज़ी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। इस के अलावा उन की ही पुस्तक 'शास्त्रीय संगीत शिक्षण' (चार भाग, 2017) है।[2] ये पुस्तकें संगीत प्रेमियों और छात्रों में बेहद लोकप्रिय हो रही हैं।

गुरमति संगीत के क्षेत्र में कार्य

सिंह बंधु गायक के रूप में हिंदुस्तानी संगीत में 70 के दशक में उभर कर सामने आए। जब उन्होंने गुरमति संगीत के क्षेत्र में अपना कार्य शुरू किया, उस समय गुरमति संगीत के क्षेत्र में चेतना जागृत हो रही थी। सिंह बंधु ने गुरमति संगीत के प्रति अपनी आस्था को देखते हुए, इस महान विरासत के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाया। उन्होंने निर्धारित रागों में शबद गायन के नियम को स्वीकार किया और गुरुवाणी गायन की अनेक प्रस्तुतियाँ दीं। शबदों के संचार और भाव अर्थ को ध्यान में रखते हुए अनेक शबदों की मौलिक सुरलिपीयाँ भी बनाईं। स. तेजपाल सिंह के अनुसार, "गुरमति संगीत की गायन शैलियों का मूल उद्देश्य गुरुवाणी के अंतर्गत दिखाए गए भाव को संगत तक पहुंचाना है न कि व्यक्तिगत संगीत उत्कृष्टता और विशेषज्ञता को दिखाना है।"[3]

सिंह बंधु द्वारा गुरुवाणी के तैयार किए गए कुछ एल्बमज़ जैसे- सतनाम-1982, (2 शबद), सूरा सो पहचानिए-1998 (6 शबद), मानस की जात-1999 (3 शबद), गावहु सच्ची वाणी-1999 (6 शब्द) आदि। संगीत निर्देशक के रूप में भी उन्होंने संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके निर्देशन में लता मंगेशकर सिंगस गुरुवाणी-1979 (8 शबद), आशा भोंसले, माई चरण गुर मीठे-1979 (5 शबद), आशा भोंसले, पंजाबी डिवोशनल-1989 (1 शबद) आदि। यह एल्बमज़ बहुत लोकप्रिय हुई।

सिंह बंधु ने 'गावहु सच्ची वाणी' कार्यक्रम के माध्यम से दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर रागबद्ध गुरुवाणी का प्रसारण किया। उनके द्वारा गुरमति संगीत के क्षेत्र में सब से बड़ा कार्य धारावाहिक 'गावहु सच्ची वाणी' (1985) का निर्माण था। यह कार्यक्रम 52 सप्ताह तक चला और पूरे गुरमति संगीत जगत का दिलचस्प कार्यक्रम बन गया। इस कार्यक्रम की पहली 10 कड़ियों में आपने शबदों का गायन किया, जो बहुत प्रसिद्ध हुए। दर्शक चाहते थे कि आप ओर शबदों का गायन करें परन्तु उन्होंने अन्य कीर्तनकारों

1 डॉ. निवेदिता सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 10 जनवरी, 2023.
2 तेजपाल सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, गुडगाँव, 22 मई, 2022.
3 तेजपाल सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, गुडगाँव, 22 मई, 2022.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

को भी शबद गायन करने का अवसर प्रदान किया। इस के अंतर्गत सुहासिनी कोर्टकर, हफीज़ अहमद ख़ान, अनूप जलोटा, दिलराज कौर, पद्मा सचदेव, रेनू सचदेव, पुष्पा रानी, नीलम साहनी, भाई बलविंदर सिंह रंगीला, भाई बख़्शीश सिंह, डॉ. गुरनाम सिंह, भाई उजागर सिंह और डॉ. अजीत सिंह पैंतल आदि ने शबदों का गायन किया।

गायक और संगीत निर्देशक के रूप में भूमिका

सिंह बंधु आकाशवाणी के 'टाप ग्रेड' कलाकार हैं। उन्होंने टी. वी. के अनेक कार्यक्रमों और वृत्तचित्र फ़िल्मों में पृष्ठभूमि संगीत देने साथ ही गायन के माध्यम से संगीत के क्षेत्र में भरपूर योगदान दिया है। 1987 में गोविन्द नहलानी के टी. वी. धारावाहिक 'तमस' जो भीष्म साहनी के उपन्यास पर बना में संगीत निर्देशक के रूप में बेहतरीन संगीत दिया। बाद में 1988 में इस धारावाहिक से 4 घंटे लंबी फ़िल्म का निर्माण हुआ। सिंह बंधु के कई एल्ल. पी. रिकॉर्ड भी मिलते हैं जिन में डाउन एंड डस्क (1980) नाम से राग नट भैरव, राग कलावती, राग बैरागी और राग मारू बिहाग आदि रिकॉर्ड किए गए। इसके अलावा इन की शास्त्रीय संगीत और गुरुवाणी संगीत की कई रिकॉर्डिंगज़ यू-ट्यूब पर उपलब्ध हैं।

मंच प्रदर्शन

संगीतक तालीम, आपसी तालमेल और लगातार रियाज़ के फलस्वरूप स. सुरिन्दर सिंह ने अपने बड़े भाई स. तेजपाल सिंह के साथ मिल कर जुगल रूप में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में मंच प्रदर्शन की शुरुआत की। 1946 में महज 9 वर्ष की उम्र में ही सिंह बंधु ने अपनी पहली रेडियो प्रस्तुति के दौरान राग भूपाली का गायन किया। राग की शुद्धता, आलाप और तानों पर पूर्ण अधिकार ने सभी श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया।[1] इस के बाद मंच प्रदर्शन का सिलसिला लगातार जारी रहा। इस दौरान उन्होंने कई बार आकाशवाणी के राष्ट्रीय संगीत सम्मेलनों में भी भाग लिया। उन्होंने भारत में हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन (जालंधर), सवाई गंधर्व संगीत सम्मेलन (पुणे), स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (मुंबई) और दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, चेन्नई, लखनऊ, मुंबई आदि शहरों में शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध संगीत सम्मेलनों के अलावा जर्मनी, फ़्रांस, ऑस्ट्रिया और पोलैंड सहित विश्व के विभिन्न देशों में गायन की प्रस्तुतियाँ दी। उन्होंने जहाँ भी गायन प्रस्तुत किया वहाँ बड़ी संख्या में श्रोताओं की पहली पसंद बने।

सम्मान और उपलब्धियाँ

सिंह बंधु द्वारा संगीत के क्षेत्र में दिए योगदान के कारण देश और विदेश की विभिन्न संस्थायों द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया है। शुरू से ही विश्वविद्यालयों और संगीत संगठनों में संगीत विशेषज्ञ के रूप में उन की सक्रिय भूमिका रही है। उनके पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के साथ अच्छे संबंध रहे हैं और उन्होंने गुरमति संगीत विभाग के शैक्षणिक विकास में भी विशेष भूमिका निभाई है। इस लिए उन्हें 2009 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा वरिष्ठ फ़ैलोशिप प्रदान की गई। डॉ. पंकज माला के अनुसार, "संगीत के क्षेत्र में सिंह बंधु के विशेष योगदान के कारण ही पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में सिंह बंधु के नाम पर एम्म. ए. की परीक्षा में टॉप करने वाले छात्र को 'सिंह बंधु' पुरस्कार हर साल प्रदान किया जाता है।"[2] आप को निम्नलिखित संगीत संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया।

- 1986 में 'साहित्य कला परिषद' पुरस्कार, दिल्ली सरकार द्वारा।
- 1995 में पंजाब और हरियाणा सरकार के राज्य पुरस्कार और 'राजीव गांधी' मेमोरियल पुरस्कार।

1 जसलीन कौर, पद्मश्री सरदार सुरिंदर सिंह 'सिंह बंधु', समाजक विज्ञान पत्र, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2011, पृष्ठ 150.

2 डॉ. पंकज माला के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 17 मार्च, 2023.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

- 2004 में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा।
- 2004 में 'पद्म श्री' पुरस्कार, स. सुरिन्दर सिंह को भारत सरकार द्वारा।
- 2008 में 'पंजाब संगीत रत्न' पुरस्कार, गुरमति संगीत चेयर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा।
- 2008 में 'सुरमणि' और 'राष्ट्र गौरव' पुरस्कार ख़ालसा त्रैशताबदी दौरान हरियाणा सरकार द्वारा।
- 2009 में 'शिरोमणि संगीतकार' पुरस्कार, पंजाब कला परिषद के सहयोग से अमृत कीर्तन ट्रस्ट, चंडीगढ़ द्वारा।
- 2009 में ' भाई वीर सिंह' पुरस्कार, पंजाब सरकार द्वारा।
- 2010 में ' ऐमीनैंट पंजाबी' पुरस्कार, पंजाब के राज्यपाल द्वारा।
- 2011 में 'बाबा अलाउद्दीन ख़ाँ' पुरस्कार, बाबा अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत फाउंडेशन (रजि:) दिल्ली द्वारा।
- 2012 में 'डी. लिट्' की आनरेरी डिगरी पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा प्रदान की गई।[1]

संगीत शिक्षक और शिष्य परम्परा

संगीत के क्षेत्र में सिंह बंधु ने कई शिष्य भी तैयार किए हैं, जिन में से कई वर्तमान समय में संगीत शिक्षा और संगीत के अन्य क्षेत्रों में संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य भी कर रहे हैं। स. तेजपाल सिंह के कुछ प्रमुख शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं- डॉ. रेणु सचदेव, डॉ प्रेरणा अरोड़ा (एसोसिएट प्रोफ़ैसर), डॉ. सुनीति दत्ता (एसोसिएट प्रोफ़ैसर), पंडित नरेश मल्होत्रा (टॉप ग्रेड), रमा सुंदर रंगनाथन (ए ग्रेड), जानवी देवी और सिंह बंधु सुरिंदर सिंह के शिष्यों में आचार्य अभिमन्यु, बृज भूषण गोस्वामी और गीतिका बरुआ आदि प्रमुख हैं।

निष्कर्ष

सिंह बंधु ने एक कुशल कलाकार, वाग्याकार, गुरु, संगीत चिंतक और संगीत निर्देशक के रूप में संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिंह बंधु को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सिक्ख भाइयों की पहली जोड़ी होने का गौरव प्राप्त है। उनके गायन से प्रेरित होकर अनेक ही युवाओं ने संगीत के क्षेत्र में कदम रखा, जो शास्त्रीय संगीत के उज्ज्वल भविष्य के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है। उन्होंने अपनी विरासत और परम्परिक स्वरूप के साथ संगीत में अपनी अलग जगह बनाई और संगीत के क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल करने के लिए अपने व्यवसाय के साथ कभी समझौता नहीं किया। अक्सर जब लोग शोहरत के शिखर पर पहुंच जाते हैं, तो वे अपनी जड़ों से टूट जाते हैं, लेकिन सिंह बंधु अपनी विरासत और जड़ों से हमेशा जुड़े रहे हैं और उसी के अनुसार उन्होंने जीवन में काम भी किया। वह पहले जुगल गायक हैं जिन्होंने पंजाबी युवाओं में संगीत के किसी भी क्षेत्र में अपनी विरासत की गरिमा में रहते हुए सफलता प्राप्त करने की भावना पैदा की। भारतीय संगीत में पंजाबियों का नाम ऊंचा करने वाले इन सिंह बंधु से संगीत जगत को आज भी बहुत उम्मीदें हैं। उपरोक्त चर्चा से यह भी ज्ञात होता है कि वह केवल बड़े गायक ही नहीं बल्कि अच्छे लेखक, वक्ता, विचारक और संगीत के विभिन्न मुद्दों पर गंभीर चर्चा करने में भी सक्षम हैं। निश्चित रूप से इस गायक जोड़ी द्वारा संगीत के क्षेत्र में किए गए कार्य भविष्य में संगीत प्रेमियों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण और सार्थक भूमिका निभाएंगे।

1 सुरिंदर सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मुंबई, 19 मई, 2022.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संदर्भ

1. https://youtu.be/xT6DFnhtl1c Conversation with Singh Bandhu.
2. तेजपाल सिंह (सिंह बंधु) प्रेरणा अरोड़ा, संगीत के देदीप्यमान सूर्या उस्ताद अमीर ख़ाँ जीवन एवं रचनाएं, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 73.
3. डॉ. गुरनाम सिंह, पंजाबी संगीतकार, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2005, पृष्ठ 122.
4. सुरिंदर सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मुंबई, 19 मई, 2022.
5. डॉ. निवेदिता सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 10 जनवरी, 2023.
6. तेजपाल सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, गुडगाँव, 22 मई, 2022.
7. तेजपाल सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, गुडगाँव, 22 मई, 2022.
8. जसलीन कौर, पद्मश्री सरदार सुरिंदर सिंह 'सिंह बंधु', समाजक विज्ञान पत्र, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2011, पृष्ठ 150.
9. डॉ. पंकज माला के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 17 मार्च, 2023.
10. सुरिंदर सिंह के साथ साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मुंबई, 19 मई, 2022.